संत समागम में सत्संग

भाग–१

श्रीश्रीमाँ के शुभ जन्मोत्सव (इं० ७.०६.२००९) पर संत श्रीराजेश्वरानन्दजी रामायणी का श्रीश्रीमाँ के प्रति श्रद्धा निवेदन :–

यन्मायावशवर्त्ति विश्मखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा
यत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भमः।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्मोधेस्तितीर्षावतां
वन्देअहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम्।
सच्चिदानन्दरुपाय विश्वोत्पत्यादि हेतवे
तापत्रे विनाशाय श्रीकृष्णाय वयंम् नुमः
उद्भवस्थिति संहारकारिणीं क्लेशहारिणीम्
सर्वश्रेयस्करी सीतां नतो अहं रामवल्लभाम्।।

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरुपेण संस्थिता
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।
सच्चिदानन्द भगवान की जय,
आदि शक्ति स्वरुपा सर्वाणी माई की जय।
सब सन्तन की जय, सब भक्तन की जय।
जय–जय सीताराम, जय–जय राधेश्याम
नमः पार्वतीपतयेः हर–हर महादेव।।

–आदिशक्ति सर्वेश्वरी माता के साक्षात् स्वरुप में विराजमान श्रीश्रीमाँ के श्रीचरणों में मैं अपनी श्रद्धा और प्रणाम निवेदन करता हूँ। यहाँ व्यक्त–अव्यक्त रुप से उपस्थित सभी संत महापुरुषों के श्रीचरणों में बारम्बार प्रणाम निवेदित करता हूँ और यहाँ उपस्थित जो भी श्रीश्रीमाँ के कृपापात्र भक्तजन, सन्तजन, देवियाँ तथा सज्जन उपस्थित हैं सभी के प्रति साधुवाद का भाव देते हुए मैं सूचना देता हूँ कि आप सब के साथ मैं भी परम सौभाग्यशाली हूँ कि भगवत्कृपा से ऐसा योग बना कि आज इस मंगलमय उत्सव में श्रीश्रीमाँ के जन्मदिन के पावन उपलक्ष्य में हमलोग अपनी वाणी को धन्य कर रहे हैं; और यह जिनकी कृपा से हो रहा है, उस प्रभु को भी बारम्बार प्रणाम। इस मंगलमय अवसर पर हमलोग 'श्रीरामकथा' श्री हनुमानजी महाराज की मंगलमय प्रेरणा से और उनकी भावमयी उपस्थिति में कह सकें, सुन सकें। भगवान श्रीकृष्ण की पावन चर्चा, भगवान शिव की चर्चा का समावेश कथा में प्रसन्नमय हो। उसके पूर्व बड़े प्रेम से श्री भगवन्नाम सुनते हैं :–

राम। जय सियाराम जय जय सियाराम
राधेश्याम जय श्यामा श्याम।।
जय जय श्री वृन्दावनधाम,
जय सियाराम जय जय सियाराम।।
ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय।।

–देवी पूजी पद कमल तुम्हारे, सुर नर मुनि सब होंहीं सुखारे–आदिशक्ति माता जगदम्बा की वन्दना करते हुए जानकी माता ने यह पंक्तियाँ कही हैं, रामचरित मानस में जिनका उल्लेख है। वे कहती हैं–हे जगन्माता, हे जगदम्बा, आपके चरण कमलों का पूजन करके ही देवता, मनुष्य और मुनि सुखी होते हैं। माता के चरणों का आश्रय लिए बिना शाश्वत सुख की प्राप्ति कर पाना असम्भव है; और संसार में कोई ऐसे प्राणी नहीं है जो सुखी ना होना चाहते हों। सब सुख चाहते हैं लेकिन सुख का उपाय एक ही है। सीताजी यह वन्दना तब करती है जब वो रामजी को पाना चाहती हैं। अब रामजी भगवान हैं और वे सहज सुख के धाम हैं।

प्रवचन करते हुये श्रीराजेश्वरानन्दजी

जो सुखधाम राम, राम असनामा

रामजी सुख के धाम हैं। रामजी भगवान हैं। अच्छा अब ज्ञानियों की दृष्टि से देखें–अपने आत्मा के स्वरुप का नाम ही राम है–आत्माराम।

अच्छा अब यहाँ सीताजी रामजी को पाना चाहती है दोनों एक ही वाटिका में हैं। जिस हृदय में जीव रहता है उसी हृदय में भगवान रहते हैं। लेकिन कठिनाई यह है कि मिले होने के बाद भी मिल नहीं पाते हैं। यह ही एक सन्त ने कहा कि ''बिछुड़ा होय तो फिर मिले और रुठा लेय मनाय, और मिला रहे फिर ना मिले, तासो कौन बसाये।'' इतना मिला हुआ है फिर भी मिलता नहीं। यह ही विचित्रता

है और यह हो कैसे सम्भव? एक ही उपाय है। अगर यह जीव अपने सच्चे स्वरुप को प्राप्त करना चाहता है, ज्ञानमार्ग का पथिक बनकर इस आत्मतत्त्व को पाना चाहता है तो मानों श्रीसीताजी अपनी लीला के द्वारा यह संकेत कर रही हैं–मैंने जब माता भवानी का, जगदम्बा का आश्रय लिया, तब मुझे रामजी की प्राप्ति हुई। अगर तुम भी अपने आत्मस्वरूप को प्राप्त करना चाहते हो और सुखधाम राम को अपने से अभिन्न करके अनुभव करना चाहते हो तो तुम भी माता के चरणों का आश्रय लो–इसके अलावा ना कोई उपाय था, ना है, ना होगा।

जय जय गिरिवर राजकिशोरी
जय महेश मुखचन्द चकोरी
जय गजवदन षड़ाननमाता
जगत् जननी दामिनी सुखदाता।

यह माता के लौकिक और अलौकिक दोनों रुपों का उल्लेख है। पर एक बात मैं आपसे बताऊँ कि लोकलीला देखकर माता को लौकिक नहीं मान लेना चाहिए। श्रीहनुमानजी बन्दर के रुप में दिखाई देते हैं पर वे बन्दर नहीं हैं। गंगाजी नदी के रुप में दिखाई देती है पर वे नदी नहीं हैं। काकभूसुण्डि जी कौए के रुप में दिखाई देते हैं पर वे कौआ नहीं है। श्रीराम श्रीकृष्ण मनुष्य के रुप में दिखाई देते हैं पर वे मनुष्य नहीं हैं। इसी प्रकार मैं आपलोगों को यह भी बताऊँ कि हमारी माताजी मनुष्य शरीर में मानविक रुप में दिखाई देती है पर वे मानवी ही नहीं हैं, वे आदिशक्ति स्वरुपा हैं। वे इस रुप में प्रकट होकर हम सब के बीच में हैं। सीताजी करती हैं माता के बालरुप की वन्दना–''जय जय गिरिवर राजकिशोरी''; माता के तरुण रुप की वन्दना–''जय महेश मुखचन्द चकोरी''; माता की मातृरुप की वन्दना, श्री गणेशजी और श्री कार्तिकेय की माता के रुप में वन्दना–''जय गजवदन षड़ाननमाता''

पर यह लौकिक परिचय देने के तुरन्त बाद श्रीतुलसीदासजी सावधान कर रहे हैं कि इतना ही परिचय पर्याप्त मत समझ लेना। यह तो लौकिक परिचय है और अलौकिक परिचय क्या है?

नहीं तो आदि मध्य अवसाना,
अमित प्रभाव वेद नहीं जाना!!

भवानी दयानी महावाक् वाणी, सकल बुधज्ञानी
जगजननी जग जानी, सुरनर मुनिजन सनमानी
ज्वालामुखी चंडी, महिषासुर मर्द्धिनी अमर पद दानी।।

ऐसे जानकी जी ने स्तुति की–हे माता, आप अलौकिक हैं, आप अनादि हैं, आप अनन्त हैं। माता प्रसन्न हुई। माता जैसा उदार और कौन हो सकता है? माता स्वयं करुणास्वरुपिणी; बोली, बेटी, प्रार्थना तो कर रही हो पर बताओ भावना क्या है? क्या चाहती हो? विनय प्रेम वश भयी भवानी। श्रीसीताजी ने कहा–और जगह जाकर तो बताना पड़ता है–हमें यह चाहिए, हमें वह चाहिए पर यहाँ बताना नहीं पड़ता। क्यों नहीं बताना पड़ता है?–

सबकी दाता है माँ सबकी मालिक है माँ
दरबदर आने-जाने से क्या फायदा?
बेतलब देने वाली ने सबकुछ दिया
फिर सदाऐं लगाने से क्या फायदा?
हाथ उठते हैं लेकिन दुआ कुछ नहीं
होंठ हिलते हैं लेकिन सदा कुछ नहीं
दिल का जो हाल है इनको मालूम है
फिर मेरे लब हिलाने से क्या फायदा?

और हम क्यों जाऐं? यह माता की महिमा है और माता के द्वार पर आकर फिर क्यों जाना? इसलिए नहीं जाना कि –माता सबकी माता है इसमें मुझको क्या कहना है? यदि कहना है तो यह कहना है कि मेरे माँ का क्या कहना है! इस दर पर आऐ तो अब दर दर का नहीं होना है।

एक ही आस्ताने से अजमत भी है
एक का होके रहने में इज्जत भी है
एक ही आस्ताने पे सिर झुक गया
दरबदर सिर झुकाने से क्या फायदा?
मैंने माना जहाँ में तेरा राज है
तेरा हेरां फकत तेरा मोहताज है
तू है माता मेरी मैं हूँ बेटा तेरा

फिर मुझे आजमाने से क्या फायदा?श्रीसीताजी यही कहती हैं, और जगह बताना पड़ता है कि हम क्या चाहते हैं,यहाँ बताने की जरुरत नहीं है।

क्रमशः...

संकलनः– मातृचरणाश्रिता श्रीमती सुशीला सेठिया